डॉ. सेतवान

वैदिक साहित्य के पुनरोत्थान में ऋषि दयानंद की भूमिका

शोध सार- भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सदियों पुराना इतिहास है। यहां ज्ञान विज्ञान का उदय व विकास सर्वप्रथम हुआ, भारत ने विश्व को राह दिखाई है। *"जब जीरो दिया मेरे भारत ने, तब दुनिया को गिनती आई",* परंतु ***"वसुधैव कुटुंबकम"*** अर्थात् विश्व को भाईचारे का पाठ पढाने वाले इस भारत वर्ष पर विभिन्न काल खण्डों में अनेक आक्रांताओं ने आक्रमण किए और यहां की सभ्यता, संस्कृति, एवं धर्म ग्रन्थों, को नष्ट करने का प्रयास किया| इसी विनाश के क्रम में उच्च कोटि के आध्यात्मिक शास्त्रों को क्षति पहुंचायी, परंतु इस धरा की मिट्टी में कुछ बात ही ऐसी है कोई कितना ही मिटाना चाहे पर मिटा नहीं पाता। मोहम्मद इकबाल साहब की दो पंक्तियां याद आती है कि-

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौर- ए- जहां हमारा।।

भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है!

यदा यदा ही धर्मस्य गिलानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम सृजाम्यहम्।।

अर्थात्- जब-जब पृथ्वी पर धर्म की हानि और अधर्म, अत्याचार की वृद्धि होती है, तब-तब महापुरुषों का अवतार होता है, उन्हीं महापुरुषों में से एक थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। जिस समय भारत पराधीनता में जकड़ा हुआ अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था, तब एक ऐसा दौर था, जहां वेद आदि शास्त्रों की अवहेलना अपने चर्म पर थी उस विपरीत समय में भी ऋषि दयानंद ने ***"वेदों की ओर लौटो"*** का न केवल नारा दिया अपितु ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, सत्यार्थप्रकाश, गोकरुणा निधि, वेद आदि शास्त्रों का पुनः भाष्य, रचकर वैदिक साहित्य को जीवंत कर दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने न केवल वैदिक वांग्मय को अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया अपितु राष्ट्रोत्थान में भी अपनी अमिट छाप छोंड़ी और भारत को स्वराज घोषित करने का नारा लगाने का सर्वप्रथम साहस किया और स्वतंत्र भारत की नींव भी रखी। अतः इस शोध पत्र के माध्यम से स्वामी दयानंद जी ने वैदिक साहित्य लेखन द्वारा वैदिक साहित्य की जो सेवा की है उससे अवगत कराना है।

संकेत शब्द: वैदिक साहित्य, ज्ञान विज्ञान, राष्ट्र, आर्यसमाज, देशभक्त, स्वामी दयानंद

लेख जानकारी

लेख लिंक: Click

लेख प्राप्त: 09/05/2024 स्वीकृत: 05/10/2024

1. पत्राचार के लिए लेखक: डॉ. सेतवान, ईमेल: setwaandiwakr1991@gmail.com

परिचय: जब-जब अशिक्षित लोग शिक्षित लोगों पर शासन करते हैं तब-तब राष्ट्र, देश, संस्था, सभ्यता, संस्कृति और इतिहास का विनाश होता है। स्वामी दयानन्द जी के समक्ष बड़ी चुनौती भारतीय संस्कृति में विधर्मियों के हस्तक्षेपों द्वारा उत्पन्न हुए पाखण्ड और अंधविश्वास को दूर करके परस्पर-विरोधी तत्त्वों का समाधान करना थी। उन्होंने देखा कि एक ओर जहाँ वैदिक संस्कृति में मानव-जीवन और समाज के उच्चतम आदर्श मूल्यों की रचनाशीलता वर्णित है, वहीं दूसरी ओर उसमें मानवता-विरोधी, समाज के शोषण को समर्थन देने वाले, अन्धविश्वासों को पोषित करने वाले विचार भी परिलक्षित होते दिखाई दे रहे हैं। अतः स्वामी जी के मन की व्याकुलता यह थी, कि वैदिक संस्कृति के मूल्यों की प्रामाणिकता क्या है अर्थात् सत्य क्या है, सत्य के लिए, मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रामाणिकता की आवश्यकता क्यों है।

महर्षि दयानंद जी पूरी तरह से आश्वस्त थे कि हिंदू धर्म में मिलावट के मूल में ज्ञान की कमी मुख्य कारण है, क्योंकि उस समय में वैदिक साहित्य के तथा कथित विद्वानों के द्वारा भाष्य किए गए, जिन्हें संस्कृत व्याकरण का अल्प ज्ञान था, ***"सायण वेद के इस आध्यात्मिक तथा नैतिक महत्व को इसलिए कम करते हैं कि उनके मत के अनुसार वेद ऐसा नैतिक धर्माचरण नहीं सिखलाता जिसका फल नैतिक एवं आध्यात्मिक होता है अपितु वह यंत्रवत् यज्ञ के क्रियाकलाप करने की शिक्षा देता है जिसका फल भौतिक होता है"।***[1] इन्हीं कारणों से वेदों और वैदिक साहित्य की निंदा हुई। स्वामी दयानंद सरस्वती जी वस्तु जगत और आध्यात्मिक जगत दोनों ही तरह के ज्ञान को महत्त्व प्रदान करते थे। स्वामी जी वेद ज्ञान को सर्वोच्च मानते थे, जो कि वैदिक ग्रंथों की आत्मा है। परन्तु ज्ञान को तर्क की कसौटी पर कसना दयानंद जी की विशेषता थी। ऋषि सदैव कहते थे, वेदों की ओर बढ़ो वेद ही सबसे तर्कसंगत हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने धर्म में भी तर्क को महत्व प्रदान किया। श्रद्धा के आधार पर कुछ भी स्वीकार न करो, चिंतन कर निष्कर्ष पर पहुँचो। ***"स्वामी जी ने वेद की वास्तविक श्रेष्ठता पहचानी की यह वेद धर्म ग्रंथ हैं जिसमें इस देश और प्राचीन राष्ट्र को बनाने वाले पूर्वजों की गहरी और प्रबल भावना छिपी है वह धर्म ग्रंथ जो दिव्य ज्ञान, दिव्य पूजा और दिव्य कर्म की चर्चा से ओत-प्रोत है"।***[2] दयानंद जी ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए *'पुनः वेदों की ओर चलो का नारा दिया'।* वे संस्कृत के प्रकाण्ड

विद्वान थे, गुजराती उनकी मातृभाषा थी, परन्तु राष्ट्र की एकता को शक्तिशाली बनाने हेतु उन्होंने जन भाषा देवनागिरी (हिन्दी) के माध्यम से ही अपना उपदेश देना प्रारम्भ किया और इसी भाषा में अपनी पुस्तकें लिखी।

स्वामी दयानंदकृत साहित्य:-

स्वामी जी ने अनेकों पुस्तकें लिखी जैसे-, संस्कार विधि, उपदेश मंजरी, भ्रान्ति निवारण, अष्टाध्यायी भाष्य, वेदांग प्रकाश आदि जिनमें से कुछ प्रशिद्ध ग्रन्थ निम्न लिखित हैं-

1. सत्यार्थ प्रकाश:- स्वामी जी के द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक सबसे प्रसिद्ध व लोगों को जागरूक करने वाली हैं। जिनमें वेदों का ज्ञान, चारों आश्रम, शिक्षा व अन्य धर्मों की कुरीतियों के बारे में बताया गया है।

2. गोकरुणानिधि – इस पुस्तक में गौरक्षा, कृषि में उनके सहयोग, उनसे मिलने वाले लाभ, गोबर, गौमूत्र का उपयोग विस्तृत वर्णन किया है।

3. संस्कृत वाक्य प्रबोधः संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार व लोगों को सिखाने के उद्देश्य से उन्होंने इस पुस्तक को लिखा। यह एक तरह से मनुष्य को संस्कृत सीखने व उसमें वार्तालाप करने के लिए प्रेरित करती है।

4. आर्योद्देश्यरत्नमाला - इसमें 100 ऐसे शब्दों को समझाया है जो हिंदू साहित्य में मुख्य तौर पर प्रयोग में आते हैं।

5. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका - यह हिंदू धर्म में वेदों के उत्थान, उनकी भूमिका व उनके उद्देश्य के बारे में बात करती है। उन्होंने इस पुस्तक में ऋग्वेद का सारा सार बताने का प्रयास किया है।

6. ऋग्वेद भाष्य - यजुर्वेद भाष्य, अष्टाध्यायी भाष्य इसके बाद उन्होंने वेदों पर कई पुस्तकें प्रकाशित की जिसमें उन्होंने सभी वेदों के सार, भूमिका, शिक्षा इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने आम जन की भाषा में वेदों को समझाने के उद्देश्य से सभी वेदों का सार हिंदी भाषा में लिखा ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा जागरूक बनें व वेदों को जानें।

7. व्यवहारभानु - यह मनुष्य जीवन के प्रतिदिन के व्यवहार व कार्यों से जुड़ी पुस्तक है।

8. चतुर्वेद विषय सूची - चारों वेदों पर लिखने से पहले उन्होंने एक पुस्तक प्रकाशित की जो उन पुस्तकों की विषय सूची थी।

9. पञ्च महायज्ञ - इस पुस्तक में उन्होंने पृथ्वी के सभी अनमोल रत्नों जैसे कि भूमि, आकाश, वायु, जल इत्यादि को सुरक्षित व स्वच्छ रखने व विभिन्न जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों को उचित सम्मान देने व उनकी हत्या न करने की प्रेरणा दी है।

श्री अरविंद अपनी पुस्तक महर्षि दयानंद में प्रष्ठ संख्या 16 में कहते हैं कि ***"महर्षि दयानंद प्रबल शब्दों में कहते हैं कि ऐसा विश्व संबंधी तत्व वेद में विद्यमान है, वे वेद में सृष्टि रचना के रहस्य तथा प्रकृति का वह विधान पाते हैं जिसके द्वारा सर्वज्ञ देव जगत पर शासन करते हैं। ना तो पाश्चात्य विद्वान वेद मित्रों के आध्यात्मिक और नैतिक महत्व को व्यक्त करने में सफल हो सके और ना ही कर्मकांडीय पंडित"।***[3] दयानन्द जी के काल में पश्चिमी संस्कृति का बोलबाला बहुत विकराल समस्या थी। भारत में यूरोपीय मध्ययुगीन धर्म को विज्ञान और मानववाद के साथ आधुनिक कहा जा रहा था। वे लोग स्वधर्म का प्रभाव बढ़ाने और सत्ता को स्थायी बनाने में अपने धर्म का उयोग कर रहे थे। अतः सनातन संस्कृति की ओर से इस चुनौती को स्वीकार करने में भारतीय अध्यात्म के वैज्ञानिक तथा मानवतावादी स्वरूप की स्थापना आवश्यक थी। फिर भारतीय अध्यात्म को इस रूप में विवेचित करने के लिए आधार-रूप प्रामाणिकता की अपेक्षा थी और इस दिशा में महर्षि दयानंद जी के अनुयाइयों ने गुरुकुल और दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालय एवं महाविद्यालय दो तरह की शिक्षा संस्थाएं स्थापित कर उल्लेखनीय भूमिका निभाई। गुरूकुल व्यवस्था दयानंद सरस्वती के वैदिक विचारों पर आधारित है। सर्वाधिक प्रसिद्धि हरिद्वार के समीप स्थित गुरूकुल कांगड़ी को प्राप्त है। जालंधर में विरोध के पश्चात् भी सबसे पहला लड़कियों का विद्यालय खुला, जिसमें सिर्फ 3 लड़कियों ने दाखिला लिया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक ज्ञान को आधार बनाकर भारतीयों का वास्तविक और गौरवपूर्ण इतिहास सबके समक्ष प्रस्तुत किया | स्वामी जी ने देखा कि रूढ़िवादिता, छुआछूत, अंधविश्वास, और पाखंड का स्तर भारतीय समाज में चर्म पर है, प्रक्षेपित ग्रंथों के अध्यन से भारत वासी अपने स्वाभिमान और गौरव को भूल बैठे हैं और आपस में बिखराव है, जिसे एक करने में वैचारिक मतभेद सामने अ रहे थे इन्ही वैचारिक मतभेदों को दूर कर सभी को राष्ट्र के हित के हेतु ***(1860)*** में गुरु विरजानंद से मथुरा में वेद, उपनिषद्, व्याकरण आदि की शिक्षा प्राप्त की और सामाजिक असमानता व भेद-भाव को मिटाने हेतु स्वामी दयानंद सरस्वती ने ***(1867)*** ई० में हरिद्वार स्थित (वर्तमान में मोहन वैदिक आश्रम) में पाखंड खण्डनी पताका फहराया और समाज में छुआछूत, आडंबर, पाखंड, ऊंच-नीच, आदि को समाप्त कर एक नए समाज की नींव रखी; और आगे चलकर सर्वप्रथम ***(1875)*** मुम्बई में ***(चैत्र सुदी 5 संवत् 1932)*** शनिवार को आर्य समाज की स्थापना की।[4] स्वामी जी ने **1874** में ही पूर्ण स्वराज् का नारा भी दिया स्वामी जी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज शब्द का प्रयोग किया और देशी राजा को ही प्राथमिकता और चक्रवर्ती राजा होने की कामना की थी।[5] सर्व प्रथम सन **1882** में विदेशी वस्तुयों का बहिष्कार करने वाले प्रथम सन्यासी दयानंद

ही थे।[6] 19वीं शताब्दी के प्रथम क्रन्तिकारी भी कोई और नहीं स्वामी जी ही थे जिन्होंने स्वधर्म, स्वराज्य, स्वभाषा, स्ववस्तु की बात कही, वह आधुनिक भारत के महान चिंतक, समाज सुधारक, और सच्चे देशभक्त थे उनका यह विचार था कि सभी भारतीयों की सोच एक और वेदों पर आधारित हो। आचार्य सत्य प्रिय शास्त्री जी कहते हैं:- "यह एक बुद्धि युक्त तथ्य है कि भारत के इस पहले विशाल स्वतंत्रता संग्राम **(1857**) का आयोजन एवं नेतृत्व स्वामी पूर्णानंद, स्वामी विरजानंद, तथा स्वामी दयानंद इन तीनों साधुओं का योगदान रहा चाहे वह सशस्त्र क्रांति युक्त ना होकर प्रवचन मात्र ही रहा हो"[7] इन तथ्यों से यह ज्ञात होता है, कि ऋषि दयानंद ने अपनी वाणी लेखन तथा विभिन्न आयोजनों से भारतीय शासकों तथा प्रजा में आजीवन देश के प्रति जोश भरा। स्वामी दयानन्द ईश्वर से कामना करते हुए कहते हैं- "हे महाधनेश्वर! हमारे शत्रुओं के बल पराक्रम को आप सर्वथा नष्ट करें, आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि प्राप्त हो"।[8]

स्वामी दयानंद ने आज़ादी के सपनों को फिर से जगाने के लिए शास्त्र का आश्रय लिया।[9] इस देश में अंग्रेजी शासन आने के पश्चात स्वामी जी पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने देशवासियों के दिल में स्वाभिमान और स्वदेशाभिमानी के दीपक को बुझने से बचाया।[10] महर्षि दयानंद ने ताउम्र राष्ट्र हित के लिए श्रेष्ठ कर्म किए जिससे सभी भारतीयों के मन में अपने देश के प्रति प्रेम और विदेशी राज्य के प्रति नफरत पैदा होने लगी उनके राष्ट्रवादी विचार जब तक उनकी पुस्तकों में अपनी अमिट छाप लेकर पैदा हुए तब तक उनके द्वारा स्थापित समाज भी उन विचारों को आगे बढ़ाता रहा। उन्होंने (स्वामी दयानंद) ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है, *"देखो अपने देश के बने हुए जूतों को दफ्तर और कचहरी में जाने की इजाजत देते हैं इस देसी जूते को नहीं इतने में ही समझ लो कि अपने देश के बने हुए जूतों का भी कितना मान प्रतिष्ठा करते हैं उतना भी अन्य देशों के मनुष्यों का भी नहीं करते"*[11] कालांतर में दयानन्द के इन्हीं विचारों से भारत का बच्चा-बच्चा जाग गया और वायसराय को लंदन हाउस में यह कहना पड़ा कि अब हमें भारत को छोड़ देना चाहिए जॉर्ज पंचम ने भी इसके लिए सहमति दे दी उनके इस परामर्श पर भारत से अंग्रेजी शासन हटा लेने का प्रस्ताव पारित हो गया असली भाग्यविधाता तो महर्षि दयानंद थे जिन्हें हम सब आज राष्ट्रपितामाह कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।[12] श्री *अरविंद अपनी पुस्तक महर्षि दयानंद में कहते हैं* ***"किसी भी दृष्टिकोण से आप सोचें, भारत के सांस्कृतिक सामाजिक धार्मिक एवं वैचारिक पुनरुत्थान के प्रथम एवं महानतम मसीह और देवदूत महर्षि दयानंद ही सिद्ध होते हैं उनके विचार शैली एवं तर्क प्रणाली से आपकी कितनी भी अस्वीकृति हो परंतु भारत की प्राचीनतम मनीषा के एकमात्र मूल व एकमात्र सर्व स्वीकृत स्रोत दिव्य ग्रंथ वेदों को स्मृति की तलविहीन दृष्ट दलदल से निकाल कर उच्चतम समादर की श्रेष्ठतम सिंहासन पर बैठा देने का काम महर्षि दयानंद ने ही किया है"।[13]***

30 अक्टूबर 1883 ई. को दीपावली के दिन स्वामी जी का भौतिक शरीर समाप्त हो गया। लेकिन उनकी शिक्षाएँ और संदेश, उनका 'आर्य समाज' आन्दोलन बीसवीं सदी के भारतीय इतिहास में एक ज्वलंत अध्याय लिख गए, जिसकी गूँज आज तक सुनी जाती है।

निष्कर्ष:-

स्वामी जी पूर्वाग्रहों से मुक्त थे, वे सार्वभौमिक सत्य को ही स्वीकार करते थे, अर्थात् वह सत्य जो सभी धर्मों में समान रूप से निहित हो, महर्षि एक विद्वान सन्यासी थे और वेदों के अचूक प्रमाणों को श्रेष्ठ विश्वस्नीय मानते थे| स्वामी दयानंद सरस्वती जी की साहित्यिक विशिष्टता इस दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है कि उन्होंने अपने गुरु महर्षि विरजानंद जी महाराज की सुधारवादी विचारधारा को धरातल पर लाकर धर्म समाज राष्ट्र तथा वैदिक साहित्य के क्षेत्र में अपने मौलिक चिंतन तथा प्रवचन बौद्धिक चिंतन से वैदिक विचारधारा में नवीन क्रांति का सूत्रधार किया| अतः स्वामी दयानंद जी एक सफल वैदिक साहित्यकार, विचारक, बौद्धिक संपदा के धनी, युग निर्माता, महान क्रांतिकारी आर्यावर्त की प्राचीन संस्कृति को गौरवशाली सिद्ध करने वाले महान सन्यासी थे। महर्षि ने अपने जीवन में अद्भुत रूप से साहित्य की सेवा की तथा मानव मात्रा के उद्धार हेतु मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने अपने अल्प जीवन में ही अनेक मानव उपयोगी पुस्तकों की रचना कर वैदिक साहित्य को अजर अमर कर दिया| उन्होंने वैदिक प्रवचनों और शास्त्रार्थों के माध्यम से भी समाज को जागरूक किया साथ ही विभिन्न स्थानों पर शास्त्रार्थ, किए, जिनमें कुछ प्रमुख शास्त्रार्थ निम्नलिखित हैं- काशी शास्त्रार्थ, हुगली शास्त्रार्थ, जालंधर शास्त्रार्थ, बरेली शास्त्रार्थ, उदयपुर शास्त्रार्थ, कोलकाता शास्त्रार्थ आदि। स्वामी जी द्वारा पूना में 15 उपदेश दिए गये, उन्होंने प्रवचनों के माध्यम से भी वैदिक ज्ञान का प्रचार प्रसार किया |[14] वे चलते फिरते ग्रंथालय थे, उन्हें अनेक वैदिक ग्रन्थों के संदर्भ मुंह जवानी याद थे।

<u>स्वामी जी के लिए कहे गये कुछ वाक्य-</u>

"ऋषि दयानंद मेरे गुरु हैं उन्होंने हमें मातृभूमि के कल्याण के लिए सोंचना, बोलना एवं कार्य करना सिखाया"

लाला लाजपत राय

"भारतीय स्वतंत्रता की नींव महर्षि दयानंद जी ने ही रखी थी"।

सरदार वल्लभाई पटेल

"मैं उस प्रचण्ड अग्नि को देख रहा हूँ जो संसार की समस्त बुराइयों को जलाती हुयी आगे बड़ रही है । वह आर्यसमाज रुपी अग्नि जो स्वामी दयानन्द के ह्रदय से निकली और विश्व में फ़ैल गयी।"

अमेरिकन पादरी एण्डर्यू जैक्स

"स्वतंत्रता सेनानियों का एक मंदिर खड़ा किया जाये तो उसमे महर्षि दयान्द मंदिर की चोटी पर सबसे ऊपर होंगे । ऋषि दयानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए' घोषणा की।"

श्रीमती एनीबेसेंट

"महर्षि दयान्द इतने अच्छे और विद्वान आदमी थे कि प्रत्येक मत के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे। "

सर सैय्यद अहमद खां

"गांधीजी राष्ट्र - पिता हैं लेकिन स्वामी दयान्द राष्ट्र-पितामह हैं।"[15]

पट्टाभि सीतारमैया

''शंकराचार्य के बाद भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे बड़ा तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर आक्रमण करने में उनसे अधिक निर्भीक रहा हो।''

योसोफिकल सोसाइटी की संस्थापिका मैडम ब्लैवेट्स्की

---

1 महर्षि दयानन्द प्रष्ठ सं.17, श्री अरविन्द चेतना समाज (पंजीकृत शिक्षात्मक न्यास) 6552/9 चमेलियान रोड दिल्ली-110006 (भारत)

2 उपरोक्त पृष्ट. सं 6

3 महर्षि दयानन्द प्रष्ठ सं. 16, श्री अरविन्द चेतना समाज (पंजीकृत शिक्षात्मक न्यास) 6552/9 चमेलियान रोड दिल्ली-110006 (भारत)

4 कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती पृष्ठ संख्या-80.

5 सत्यार्थप्रकास छटा सम्मुलास |

6 सत्यार्थप्रकास सातवां सम्मुलास

7 आचार्य सत्य प्रिय शास्त्री जी की पुस्तक *" भारतीय स्वतंत्र्य संग्राम में आर्य समाज का योगदान"* पृष्ठ संख्या 5-3

8 अर्याभिविनय-1.43

9 हमारा राजस्थान पृष्ठ 266

10 श्री सत्यदेव विद्यालंकार की पुस्तक राष्ट्रवादी दयानंद पृष्ठ संख्या 32

11 सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11

12 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष (80) प्रतिशत योगदान पृष्ठ **संख्या 73**

13 महर्षि दयानन्द प्रष्ठ सं.1, श्री अरविन्द चेतना समाज (पंजीकृत शिक्षात्मक न्यास) 6552/9 चमेलियान रोड दिल्ली-110006 (भारत)

14 उपदेश मन्जरी, हितकारी प्रकाशन समिति, हिंडन सिटी 322230 (राजस्थान)

15 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का विशेष (80) प्रतिशत योगदान पृष्ठ **संख्या- 416-417**